

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- [dhabeerparasad@gmail.com](mailto:dhabeerparasad@gmail.com)

---

## INTELLIGENCE QUOTIENT(I.Q)

बुद्धि-लब्धि(I.Q)के संप्रत्यय को टर्मन तथा उनके सहयोगियों ने निकाला। स्टर्न ने मानसिक लब्धि के संप्रतायय को निकाला उन्होंने कहा कि किसी बच्चे की मानसिक आयु को उसकी वास्तविक आयु से विभाजित करके मानसिक लब्धि निकालि जा सकती है। इसी संप्रत्यय से 1916 में टर्मन आदि ने बुद्धि लब्धि का संप्रत्यय निकाला। असल में स्टर्न की मानसिक लब्धि तथा टर्मन की बुद्धि-लब्धि में कोई भेद नहीं है, केवल पद का अंतर है। इस प्रकार स्टर्न ने ही वास्तविक अर्थ में बुद्धि लब्धि के संप्रत्यय को विकसित किया। इससे बुद्धि-मापन में बड़ी आसानी हुई। इसके आधार पर केवल इतना पता चलता था कि अमुक बच्चे की बुद्धि अमुक बच्चे से कम या अधिक हैं। कितना अधिक या कम है, इसकी जानकारी संभव नहीं थी। इसी दोष को दूर करने के लिए बुद्धि लब्धि का संप्रत्यय निकाला गया। इससे बच्चों की बुद्धि का मात्रात्मक मापन संभव हो सका। टर्मन ने बुद्धि-लब्धि निकालने का एक सेत्र भी बनाया-

बुद्धि-लब्धि =मानसिक आयु / वास्तविक आयु ×100

अतः यदि वास्तविक आयु तथा मानसिक आयु समान हों तो बुद्धि-लब्धि पुरा 100 होगा। यदि मानसिक आयु अधिक होगी तो बुद्धि-लब्धि 100 से उपर होगी और मानसिक आयु वास्तविक आयु से कम होने पर बुद्धि-लब्धि 100 से निचे होगी। सूत्र में 100 का व्यवहार इसलिए किया जाता है कि दशमलव बिंदु को दूर किया जा सके तथा प्राप्तांकों को फैलाया जा सके। दूसरी बात यह है कि सामान्य या औसत व्यक्ति में बुद्धि-लब्धि 100 माना जाता है।

टर्मन आदि ने 1960 में स्टैनफोर्ड बिने-परीक्षण में संशोधन लाया। इस संशोधित परीक्षण में बुद्धि-लब्धि का अर्थ वही रहा, परन्तु किसी भी आयु के लोगों की बुद्धि-लब्धि निकालने की व्यवस्था की गयी। इससे लाभ यह हुआ कि बुद्धि-लब्धि केवल 16 वर्ष तक सिमित नहीं रही और इसका निर्धारण अधिक सहज बन गया।